



SHRI HEM CHANDRA GOSWAMI

Shri Hem Chandra Goswami is a stalwart sattriya artist known in the country and abroad for his thought-provoking ability, innovation and skill.

2. Born on 1st March, 1958, Shri Goswami passed his HSLC Examination from a local High School and then he took the bachelor degree in Arts and Crafts from Arts and Crafts Society of Guwahati, Assam. From his childhood he was acquainted with the environment of satra, i.e., Vaishnavite monastery of Assam, where mask making is an indispensable trait. It was the great Guru Sankaradeva, who had innovated the art of mask making from bamboo splits which are invariably used in the Vaishnavite plays (bhaona) and dances (satriya nritya) performed in the satras (Vaishnavite monasteries) and namghars (village level Vaishnavite prayer house).

3. Shri Goswami plays the pivotal role for the acceleration of the pristine skill from local to the national and universal context. Masks prepared by him are at present installed and displayed at reputed institutions like Dibrugarh University, Tezpur University, Srimanta Sankaradeva Kalakshetra, Guwahati; Vivekananda Institution, Guwahati; Indira Gandhi National Centre for Arts, New Delhi; Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya, Bhopal, etc., and in the museum of abroad like America, Great Britain, France, Germany, Italy, Israel, etc. In the year 2015 the Chief Curator of the British Museum Shri. T. Richard Blurton came to Majuli to discuss about the mask depicted in the Vrindavani Vastra preserved in the British Museum. He met Shri Goswami to know about the mask depicted in that heritage textile piece of Assam, stayed there for five days and took back with him five masks which are now preserved in the British Museum. The masks were displayed in an exhibition entitled Krishna in the Garden of Assam which was held at the British Museum from January to August, 2016.

4. Shri Goswami had delivered lectures on the heritage of split bamboo mask in different institutions of the country like Dibrugarh University, Tezpur University, Vivekananda Kendra: Guwahati; Indira Gandhi Cultural Centre for the Arts; New Delhi; Visva-Bharati: Santiniketan, etc.

5. Shri Goswami had established an institute on Sattriya Art and culture in Chamaguri Satra Majuli, viz., Sukumar Kala peeth to teach the new generation about the heritage of mask making of this remote part of India.

6. Shri Goswami has been conferred with different prestigious awards for his expertise in mask making, which includes La Mezo Da Anand Award: 2012, Damodara Deva National Award: 2014, PhD from Gauhati University (Honourous causa) ,2017, Luitporia Life time Achievement Award 2018 Sangeet natak academy award 2019, Achiever Award in Excellence on Art by Pratidine Time, Assam, 2022.



श्री हेमचन्द्र गोस्वामी

श्री हेमचन्द्र गोस्वामी एक दिग्गज सत्रीय कलाकार हैं जो अपनी विचार-प्रेरक योग्यता, नवाचार और कौशल के लिए देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं।

2. 1 मार्च, 1958 को जन्मे, श्री गोस्वामी ने एक स्थानीय हाई स्कूल से एचएसएलसी की परीक्षा पास की और फिर उन्होंने गुवाहाटी, असम की आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स सोसाइटी से कला और शिल्प में स्नातक की डिग्री ली। बचपन से ही वे सत्र यानी असम के वैष्णव मठ के वातावरण से भली-भांति परिचित थे, जहां मुखौटा बनाना एक अनिवार्य गुण है। महान गुरु शंकरदेव ने बांस की खपच्चियों से मुखौटा बनाने की कला ईजाद की थी, जिनका सत्रों (वैष्णव मठों) और नामघरों (ग्राम स्तर के वैष्णव प्रार्थना घर) में किए जाने वाले वैष्णव नाटकों (भावोना) और नृत्यों (सत्रीय नृत्य) में अनिवार्य रूप से इस्तेमाल किया जाता है।

3. श्री गोस्वामी ने प्राचीन कौशल को स्थानीय से राष्ट्रीय और विश्वस्तर तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके द्वारा तैयार किए गए मुखौटे वर्तमान में डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, तेजपुर विश्वविद्यालय, श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी; विवेकानंद संस्थान, गुवाहाटी; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल आदि जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों और अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, इजराइल आदि देशों के संग्रहालयों में स्थापित और प्रदर्शित किए गए हैं। वर्ष 2015 में ब्रिटिश संग्रहालय के मुख्य क्यूरेटर श्री. टी. रिचर्ड ब्लर्टन, ब्रिटिश संग्रहालय में संरक्षित वृंदावनी वस्त्र में दर्शाए गए मुखौटे के बारे में चर्चा करने के लिए माजुली आए थे। वह असम के उस हेरिटेज टेक्सटाइल पीस में दर्शाए गए मुखौटे के बारे में जानने के लिए श्री गोस्वामी से मिले, वहां पांच दिन तक रहे और अपने साथ पांच मुखौटे ले कर गए जो अब ब्रिटिश संग्रहालय में संरक्षित हैं। इन मुखौटों को जनवरी से अगस्त, 2016 तक ब्रिटिश संग्रहालय में आयोजित कृष्णा इन द गार्डन ऑफ असम नामक प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया था।

4. श्री गोस्वामी ने देश के विभिन्न संस्थानों जैसे डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, तेजपुर विश्वविद्यालय, विवेकानंद केंद्र, गुवाहाटी; इंदिरा गांधी सांस्कृतिक कला केंद्र, नई दिल्ली; विश्वभारती, शांतिनिकेतन, आदि में बांस के मुखौटे की परंपरा पर व्याख्यान दिए हैं।

5. श्री गोस्वामी ने नई पीढ़ी को भारत के इस दूरस्थ भाग की मुखौटा निर्माण विरासत सिखाने के लिए चामगुरी सत्र माजुली में सत्रीय कला और संस्कृति पर एक संस्थान अर्थात सुकुमार कला पीठ की स्थापना की है।

6. श्री गोस्वामी को मुखौटा निर्माण विशेषज्ञता के लिए अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें ला मेज़ो दा आनंद पुरस्कार, 2012; दामोदर देवा राष्ट्रीय पुरस्कार, 2014; गुवाहाटी विश्वविद्यालय से पीएचडी (मानद), 2017; लुइटपोरिया लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड 2018; संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2019; प्रतिदिन टाइम, असम द्वारा अचीवर अवार्ड इन एक्सीलेंस ऑन आर्ट, 2022 शामिल हैं।